

## **Durga Puja Vidhi on Durga Ashtami**

Durga Ashtami is celebrated with a series of rituals, each with its unique significance and role in the overall observance of the festival. Here is a detailed guide to the Durga Puja Vidhi on Durga Ashtami:

### **Observing Fasting:**

Many devotees choose to observe a fast on Durga Ashtami. The fasting regimen can vary, with some abstaining from all food and water, while others practice a partial fast by consuming fruits, milk, and specific fasting-friendly items.

### **Preparation for the Puja:**

Devotees typically wake up early on Durga Ashtami to prepare for the day's rituals. This may include a purification bath to cleanse the body and mind before commencing the puja.

### **Setting Up the Puja Area:**

A dedicated space, either in a temple or at home, is prepared for the Durga Puja. The idol of Goddess Durga, along with the idols of her divine children (Lakshmi, Saraswati, Kartikeya, and Ganesha), is placed on a decorated platform or altar.

### **Invocation of Goddess:**

The puja begins with the invocation of Goddess Durga. Devotees chant mantras and perform arati, waving lamps and incense before the deity to welcome her divine presence.

### **Chandipath:**

Chandipath, the recitation of verses from the Devi Mahatmya or Durga Saptashati, plays a significant role in Durga Ashtami puja. These verses narrate the heroic stories of the goddess's battles against evil forces. Chanting these verses invokes the blessings of the goddess and strengthens the connection between the devotee and the divine.

**Kanya Puja:**

A beautiful and touching ritual called Kanya Puja is a vital part of Durga Ashtami celebrations. Nine young girls, often considered the embodiment of the goddess, are invited to participate. These girls are treated with great respect and affection. Devotees offer them new clothes, gifts, and prasad as a symbol of honoring the divine feminine energy present in them.

**Sandhi Puja:**

Sandhi Puja is a pivotal and spiritually potent part of Durga Ashtami. It is performed at the juncture when Ashtami ends, and Navami begins. This transitional moment is considered exceptionally auspicious, and devotees offer 108 lotus flowers and light 108 lamps, symbolizing the powerful energy and blessings of Goddess Durga.

**Anjali - Offering of Prayers:**

Devotees offer 'anjali,' a gesture of folded hands and heartfelt prayers to the goddess. This is a personal moment for each individual to express their devotion, gratitude, and desires to the divine mother.

**Sindoor Khela:**

In some regions, especially in West Bengal, Sindoor Khela is a colorful tradition observed on Durga Ashtami. Married women apply vermilion (sindoor) to the goddess's idol and to each other, celebrating womanhood and married life. It is a joyous and emotional occasion that fosters a sense of sisterhood among women.

**Feasting:**

Following the fasting and rituals, devotees break their fast with a sumptuous meal. This festive feast is a time for joy, togetherness, and celebration.

## दुर्गा अष्टमी पर दुर्गा पूजा विधि

दुर्गा अष्टमी को अनुष्ठानों की एक श्रृंखला के साथ मनाया जाता है, जिनमें से प्रत्येक का त्योहार के समग्र पालन में अपना अनूठा महत्व और भूमिका होती है। यहां दुर्गा अष्टमी पर दुर्गा पूजा विधि की विस्तृत मार्गदर्शिका दी गई है:

### व्रत रखना:

कई भक्त दुर्गा अष्टमी का व्रत रखना पसंद करते हैं। उपवास का तरीका अलग-अलग हो सकता है, कुछ लोग सभी भोजन और पानी से परहेज करते हैं, जबकि अन्य फल, दूध और विशिष्ट उपवास-अनुकूल वस्तुओं का सेवन करके आंशिक उपवास करते हैं।

### पूजा की तैयारी:

भक्त आमतौर पर दिन के अनुष्ठानों की तैयारी के लिए दुर्गा अष्टमी पर जल्दी उठते हैं। इसमें पूजा शुरू करने से पहले शरीर और मन को शुद्ध करने के लिए शुद्धिकरण स्नान शामिल हो सकता है।

### पूजा क्षेत्र की स्थापना:

दुर्गा पूजा के लिए मंदिर या घर में एक समर्पित स्थान तैयार किया जाता है। देवी दुर्गा की मूर्ति, उनके दिव्य बच्चों (लक्ष्मी, सरस्वती, कार्तिकेय और गणेश) की मूर्तियों के साथ, एक सजाए गए मंच या वेदी पर रखी जाती है।

### देवी का आह्वान:

पूजा की शुरुआत देवी दुर्गा के आह्वान से होती है। भक्त उनकी दिव्य उपस्थिति का स्वागत करने के लिए देवता के सामने मंत्रों का जाप करते हैं और आरती करते हैं, दीपक और धूपबत्ती लहराते हैं।

### चंडीपाठ:

चंडीपाठ, देवी महात्म्य या दुर्गा सप्तशती के छंदों का पाठ, दुर्गा अष्टमी पूजा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ये छंद बुरी ताकतों के खिलाफ देवी की लड़ाई की वीरतापूर्ण कहानियों का वर्णन करते हैं। इन छंदों का जाप करने से देवी का आशीर्वाद प्राप्त होता है और भक्त और परमात्मा के बीच संबंध मजबूत होता है।

## कन्या पूजा:

कन्या पूजा नामक एक सुंदर और मार्मिक अनुष्ठान दुर्गा अष्टमी उत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। नौ युवा लड़कियों को, जिन्हें अक्सर देवी का अवतार माना जाता है, भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। इन लड़कियों के साथ बहुत सम्मान और स्नेह से व्यवहार किया जाता है। भक्त उनमें मौजूद दिव्य स्त्री ऊर्जा के सम्मान के प्रतीक के रूप में उन्हें नए कपड़े, उपहार और प्रसाद चढ़ाते हैं।

## संधि पूजा:

संधि पूजा दुर्गा अष्टमी का एक महत्वपूर्ण और आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली हिस्सा है। यह उस समय किया जाता है जब अष्टमी समाप्त होती है और नवमी शुरू होती है। इस संक्रमणकालीन क्षण को असाधारण रूप से शुभ माना जाता है, और भक्त 108 कमल के फूल चढ़ाते हैं और 108 दीपक जलाते हैं, जो देवी दुर्गा की शक्तिशाली ऊर्जा और आशीर्वाद का प्रतीक है।

## अंजलि - प्रार्थना की पेशकश:

भक्त 'अंजलि' चढ़ाते हैं, जो देवी को हाथ जोड़कर और दिल से प्रार्थना करने का एक संकेत है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए दिव्य माँ के प्रति अपनी भक्ति, कृतज्ञता और इच्छाओं को व्यक्त करने का एक व्यक्तिगत क्षण है।

## सिन्दूर खेला:

कुछ क्षेत्रों में, विशेष रूप से पश्चिम बंगाल में, सिन्दूर खेला एक रंगीन परंपरा है जो दुर्गा अष्टमी पर मनाई जाती है। विवाहित महिलाएँ नारीत्व और विवाहित जीवन का जश्न मनाते हुए, देवी की मूर्ति और एक-दूसरे को सिन्दूर लगाती हैं। यह एक खुशी और भावनात्मक अवसर है जो महिलाओं के बीच भाईचारे की भावना को बढ़ावा देता है।

## दावत:

व्रत और अनुष्ठानों का पालन करते हुए, भक्त स्वादिष्ट भोजन के साथ अपना उपवास तोड़ते हैं। यह उत्सव आनंद, एकजुटता और उत्सव का समय है।